Rajesh K Thakre.

वे शैतान अब मेरे हाथों से बचकर नहीं जा सकते।
परन्तु सावधान रहना। कहीं पीछा करते देख वे हम पर इस बार फायरिंग करने की बजाय एकाध हथगोला ही न फेंक दें।

चिंता मत करो। अब हम नहीं, बल्कि हमारे हमलावर मरेंगे।

कालिया, वे छोकरे तो हमारे पीछे लग गये।

सड़क सुनसान है। उन्हें एक बार फिर मारने की कोशिश करो, वरना मिस्टर एक्स हमें जिंदा नहीं छोड़ेगा।

वे गाड़ी को लहराकर चला रहे हैं, फिर भी कोशिश करता हूं।

धांय... धांय...!

वे लोग शराफत से बाज नहीं आने वाले। रहीम, तुम भी अपना रिवॉल्वर निकालकर जरा कार के पहियों का निशाना लो!
ठीक है।

अगले ही पल—
गोलियां संभालकर खर्च करना रहीम!
धांय-धांय...!

उफ! कम्बख्तों ने जवाबी फायरिंग शुरू कर दी। यदि कोई गोली टायर में लग गई तो मुश्किल हो जायेगी।
धांय-धांय...!

मेरी समझ में नहीं आता कि तुम और मि. एक्स उन छोकरों से इतना डरते क्यों हो...

... मेरी मानो तो कार यहीं रोककर उनसे वैसे ही निपट लो। वे मामूली से दो छोकरे भला हम चार-चार हृष्ट-पुष्ट व्यक्तियों का क्या बिगाड़ लेंगे...

... फिर हम चारों के पास चाकू, रिवॉल्वर, दस्ती बम आदि सबकुछ है। उन्हें खत्म करने में हमें चंद सैकिण्ड भी नहीं लगेंगे।

तुम मूर्ख हो राका। वरना उन दोनों खतरनाक छोकरों के विषय में ऐसी बचकानी बात कदापि नहीं कहते।

...उन्हें तुम साधारण छोकरे मत समझो राका। वे दोनों छोकरे अब तक हिटलर जैसा हौसला रखने वाले कई बड़े-बड़े अपराधियों को जहन्नुम पहुंचा चुके हैं।
ऊंह! तुम सब बुजदिल हो। खैर, अब तुम मुझे यह बताओ कि करना क्या चाहते हो?
वे दोनों सावधान हो चुके हैं, इसलिए अब उन्हें खत्म करना मुश्किल है। अब हमारी भलाई इसी में है कि किसी तरह उनसे पीछा छुड़ाकर रफूचक्कर हो जायें।
और मि. एक्स को क्या जवाब देंगे?
धांय-धांय।
वह इतना मूर्ख नहीं, जो हमारी असफलता का कारण नहीं समझ सके।
धांय-धांय।
रहीम, तुम अब तक लगभग डेढ़ दर्जन गोलियां खर्च कर चुके हो, लेकिन तुम्हारी एक भी गोली अभी तक सही निशाने पर नहीं लगी, क्या बात है? क्या तुम रिवॉल्वर चलाना भूल गये हो?

भूल तो नहीं गया। दरअसल वे कम्बख्त बड़ी चालाकी और सफाई से आड़ी-तिरछी गाड़ी दौड़ा रहे हैं, जिससे निशाना ठीक नहीं बैठ रहा है...
...लेकिन चिंता मत करो, इस बार मेरी गोली खाली नहीं जायेगी।
शाबाश! तो फिर दिखाओ अपना कमाल।

तभी अचानक कार की गति बहुत तेज हो गई।
ओह! लगता है, अब वे जान बचाकर भागने की फिराक में हैं।
ठीक कहते हो, लेकिन मैं भी आज पाताल तक उनका पीछा नहीं छोड़ने वाला।

शुक्र है कि अब उन्होंने गोलियां बरसानी बन्द कर दी हैं।

कालिया। वे शैतान छोकरे तो हमारा पीछा छोड़ने का नाम ही नहीं ले रहे। अब क्या करें?

उस व्यक्ति ने जेब से पॉकेट ट्रांसमीटर निकाला और अपने बॉस मि. एक्स से सम्बन्ध स्थापित किया।

हम इस समय साइंस रोड से गुजर रहे हैं मि. एक्स!

गुड! साइंस रोड तो इस समय सुनसान होगी?
यस बॉस!

तो फिर कार के स्पीडोमीटर के ऊपर लगे बटन को दबा दो। कार रॉकेट की तरह दौड़ेगी और पलक झपकते ही तुम लोगों का पीछा उन शैतान छोकरों से छूट जायेगा। समझे!

समझ गया बॉस!

रोमी, स्पीडोमीटर के ऊपर लगा विशेष बटन दबाकर कार की स्पीड रॉकेट की तरह कर दो।
ओह! इस लाल रंग के बटन की ओर तो मैंने कभी ध्यान ही नहीं दिया था, जबकि इस कार को मैं बीसियों बार ड्राइव कर चुका हूं।

बेकार की बातों में समय बरबाद मत करो। जल्दी से बटन दबाकर उन छोकरों से पीछा छुड़ाओ।
अरे भाई, दबा तो रहा हूं।

लेकिन उस बटन के दबाते ही –
धड़ाम!

एक भयानक विस्फोट के साथ कार के परखचे उड़ते देख राम ने बड़ी तेजी के साथ अपनी मोटर साइकिल के ब्रेक लगाये।
चीं...चीं...चीं...!
अरे...रे...रे...!

सहसा लगाये जाने वाले इस ब्रेक से उनकी मोटर साइकिल लुढ़कते-लुढ़कते बची।
उफ! हमारी जान तो बच गई। लेकिन उम्मीद नहीं कि उन हमलावरों में से किसी की भी जान बची होगी।
लेकिन यह हादसा हुआ कैसे?
जरूर कार में रखा कोई बम फटा होगा। नीचे उतरो।
हां, यही बात हो सकती है।
आओ देखते हैं। शायद उनमें से कोई जीवित बचा हो।
ओह! कार तो उस जबरदस्त विस्फोट से बुरी तरह नष्ट हो गयी है। ऊपर से यह भीषण आग। मुझे तो इसमें किसी के जीवित बचने की उम्मीद नहीं।
ठीक कहते हो। आग बुझने का इन्तजार करना भी बेकार है...

... आओ चलते हैं। मार्ग में किसी पब्लिक बूथ से पुलिस को फोन कर देंगे।
शीघ्र ही –
राम भइया, आखिर वे हमलावर कौन हो सकते थे ?
इस शहर में हमारे बहुत से दुश्मन पैदा हो चुके हैं, इसलिए यह कहना अभी कठिन है कि हमारी जान लेने की कोशिश किसने की।
राम भइया, एक माह के भीतर-भीतर यह हम पर चौथी बार आक्रमण हुआ है। ओह अल्लाह का शुक्र है कि हम इस बार भी बाल-बाल बच गये...
... भइया, क्या इन आक्रमणों से तुम यह अंदाजा नहीं लगा रहे कि हमें मौत के घाट उतारने की कोशिश के पीछे किसी सशक्त गैंग का हाथ है।
हो सकता है।

हो सकता है नहीं, बल्कि है। वरना कोई छोटा-मोटा बदमाश इतनी जल्दी हमारी जान लेने की हिम्मत नहीं कर सकता...

...बल्कि मैं तो दावे के साथ यह भी कह सकता हूं कि अपराधी जो कोई भी है, हमसे अच्छी तरह परिचित है, इसलिए वह खतरे को भांपते हुए हमारे सामने नहीं आना चाहता और बार-बार किराये के पिट्ठुओं से हमारी हत्या करवाने की कोशिश कर रहा है।

हा-हा-हा!
तुम मेरी बात सुनकर हंस रहे हो।

हां, लेकिन इसलिए कि तुम वास्तव में बुध्दिमान होते जा रहे हो। तुम्हारी बातों में काफी दम है...

...परन्तु क्या तुमने इस विषय में भी सोचा कि हम पर लगातार चार हमले करने वाला अपराधी आखिर हमें मारना क्यों चाहता है?

शायद उसकी हमसे कोई पुरानी दुश्मनी हो या...।

या हमने उसकी भैंस चुरा ली हो। हा-हा-हा! रहीम, यदि तुम यह प्वाइंट भी जान लेते तो निःसंदेह तुम दुनिया के नहीं तो भारत के सर्वश्रेष्ठ जासूसों में एक हो जाते...

...खैर, अब इस टॉपिक को बन्द करो, घर आ गया है। यदि मम्मी को पता चल गया कि हम पर फिर आक्रमण हुआ है तो वे हमारा घर से निकलना तक बन्द कर देंगी...

...और स्कूल की छुट्टियों का सारा मजा किरकिरा हो जायेगा।
और कोठी के द्वार तक पहुंचते ही दोनों के मध्य एक लम्बी खामोशी व्याप्त हो गई।

उधर शहर के मध्य ही स्थापित एक इमारत के लम्बे-चौड़े हॉल में-
समझ में नहीं आता मि. एक्स कि उन छोकरों को मारने में तुम्हारे आदमी बार-बार नाकाम क्यों रहते हैं?
तुमने जो काम हमें सौंपा है मेजर, वह इतना साधारण नहीं, जितना तुम समझ रहे हो...

...राम-रहीम उस शह का नाम है, जिनसे मौत भी टकराने से घबराती है, फिर उन कम्बख्तों के साथ किस्मत भी है और उनका भगवान भी, जो हर बार उन्हें बचा लेता है।
देखो मि. एक्स! जैसे भी हो, तुम्हें उन्हें समाप्त करना है। मैंने अपनी सरकार की ओर से तुम्हें इस छोटे से काम के लिये करोड़ों की रकम दी है...

...और यदि तुमने उन्हें मौत के घाट नहीं उतार तो हमारा-तुम्हारा न केवल सौदा खत्म हो जायेगा, बल्कि तुम पर से हमारी सरकार का विश्वास भी उठ जायेगा...

...और फिर वह तुमसे रुष्ट होकर आइन्दा तुम्हें कोई महत्त्वपूर्ण काम नहीं सौंपेगी।

मैं जानता हूं मेजर, इसलिए मैं पूरी कोशिश करूंगा कि तुम्हारी सरकार हमसे अप्रसन्न न हो। चाहे उन दोनों छोकरों को समाप्त करने के लिए मुझे कातिलों की पूरी फौज ही क्यों न लगा देनी पड़े, मैं उन्हें खत्म करके ही छोड़ूंगा।

गुड! यही तुम्हारे और मेरे हक में अच्छा होगा। वैसे भी तुम हमारे देश के खास एजेण्ट हो।

हैलो, एक्स स्पीकिंग।

बॉस, मैं ब्लैक जीरो बोल रहा हूं।

रिपोर्ट दो।

बॉस, राम-रहीम जिंदा बच गये, लेकिन हमारे किराये के चारों आदमियों का काम तमाम हो गया।

उनका यही हश्र उचित था। मैं असफल लोगों को बिल्कुल भी पसन्द नहीं करता। फिर उनका मरना ही हमारे हक में अच्छा था। अगर वह कहीं उन छोकरों के हाथ लग जाते तो हमारे लिये भयानक खतरा बन जाते।

मेरा भी यही विचार था बॉस! अब मेरे लिये क्या आज्ञा है?

तुम सावधानी के साथ राम-रहीम पर नजर रखो और मुझे उनकी एक-एक हरकत और पल-पल की रिपोर्ट ट्रांसमीटर द्वारा देते रहो।
ठीक है बॉस!
दूसरी ओर से कहा गया और मि. एक्स ने सम्बन्धविच्छेद कर रिसीवर क्रेडिल पर पटका दिया।
उफ! उन दोनों शैतानों की वजह से मुझे अपने कई साथियों की जानें गंवानी पड़ी हैं। शुक्र है, मेरे वे सभी साथी किराये के थे, वरना अपने आदमियों की मौत का मुझे और भी ज्यादा अफसोस होता।
मि. एक्स, यदि मेरी मानो तो अब किराये के आदमियों से काम न लेकर इस मामले में खुद मैदान में उतर आओ...
...वे दोनों हर किसी के वश में आने वाले नहीं हैं।
तुम ठीक कहते हो मेजर, अब मुझे स्वयं ही अपनी योजना के साथ उनसे टकराना होगा, तभी काम बनेगा।

यही अच्छा होगा मि. एक्स! यह काम जितनी जल्दी हो जाये अच्छा है। हमारी सरकार जल्द से जल्द उनकी मृत्यु का समाचार सुनना चाहती है।

एक बात पूछूं मेजर, बुरा तो नहीं मानोगे?
नहीं! पूछो, क्या पूछना चाहते हो?

तुम्हारी सरकार उन छोकरों की मौत में इतनी दिलचस्पी क्यों ले रही है? यह ठीक है कि वे दोनों काफी खतरनाक किस्म के चालाक लड़के हैं, लेकिन तुम्हारी सरकार के लिए इतने खतरनाक तो नहीं हैं, जितना उन्हें महत्त्व दिया जा रहा है।

हमारी सरकार की मनोस्थिति तुम नहीं समझोगे मि. एक्स! वे कम्बख्त एक बार हमारे देश में आये थे और उन शैतानों ने अपने एक एजेण्ट को हमारी कैद से छुड़ाने के लिए इतनी तबाही और बरबादी मचाई थी कि पूरा देश ही एक बारगी कांप उठा था...

...बस,हमारी सरकार उन दोनों से उसी तबाही और बरबादी का बदला लेना चाहती है। हमारी सरकार को अब तभी चैन और सकून मिलेगा, जब वे दोनों हिन्दुस्तानी कुत्ते इस दुनिया में नहीं रहेंगे।
ओह! अब मैं सारी बात समझा।
उसके बाद गंजा मेजर मि.एम्स से विदा लेकर वहां से चला गया।

उधर राम के घर में अगले दिन सुबह नाश्ते के समय—
अरे,तुम दोनों तो नाश्ते पर इतनी जल्दी-जल्दी हाथ साफ कर रहे हो, जैसे किसी लड़ाई पर जाना हो।आखिर बात क्या है?
रहीम, तुम बात बताओ।

बात ज्यादा बड़ी और लम्बी नहीं है आंटी! बस, इतनी है कि हमें अपने दोस्तों के साथ पिकनिक पर जाना है...

...टाइम ठीक नौ बजे का फिक्स है, जबकि पौने नौ यहीं बज रहे हैं। इसलिए...
बस-बस,मैं सब समझ गई। मैं तो तंग आ गई तुम्हारे रोज-रोज के पिकनिक,पार्टी और शादी-ब्याह से...

...पता नहीं तुम दोनों वास्तव में सच बोलते हो या इस बहाने सुबह से शाम व कभी रात देर गये तक आवारा-गर्दी करते रहते हो...

...आने दो उन्हें, इस बार उन्हीं से तुम दोनों को डांट खिलवाऊंगी। तभी तुम दोनों सुधरोगे।

राम-रहीम उसी समय नाश्ता करके उठ खड़े हुए।
अच्छा मम्मी, अब हम चलते हैं। लेकिन हां, यह हमारा तुमसे वायदा रहा कि इस बार जब डैडी छुट्टियों में घर आयेंगे तो हम बिल्कुल ही घर से निकलना बन्द कर देंगे...

ओ. के. बॉय-बॉय।

मैं तुम्हारी बात का मतलब अच्छी तरह समझती हूं शैतान लड़को। लेकिन मेरा नाम भी राधा है। इस बार उनके आने पर मैं तुम्हें छोड़ने वाली नहीं। मेरी शिकायत पर वे तुम्हारी अच्छी तरह खबर लेंगे।

राम भइया, क्या मोटरसाइकिल या कार लेकर चलने का इरादा नहीं है?
नहीं! हम बाहर से टैक्सी पकड़ेंगे।

बाहर निकलकर—
टैक्सी!

टैक्सी के रुकने पर राम-रहीम टैक्सी के भीतर समा गये।
माल रोड चलो।
जी साहब!

टैक्सी अपनी मंजिल की ओर दौड़ पड़ी।
हां, अब बताओ कि हम लोग माल रोड़ क्यों चल रहे हैं?
किसी अजनबी ने फोन करके हमें वहां बुलाया है।

अजनबी ने! लेकिन क्यों?
कहा तो उसने यही था कि वह हमें उस व्यक्ति के बारे में बताना चाहता है, जो बार-बार हमारी जान लेने की कोशिश कर रहा है।

और तुम उसकी बातों पर विश्वास करके तुरन्त उससे मिलने चल पड़े...

...राम भइया, तुम्हारा दिमाग तो ठीक-ठाक है ना! यह अपराधी की पांचवीं बार हमारी जान लेने की चाल भी तो हो सकती है। क्या तुमने यह भी सोचा?

सोचा था, लेकिन इसे हम मात्र अपराधी की चाल समझकर हाथ पर हाथ धरकर भी तो नहीं बैठ सकते। मैं देखना चाहता हूं कि अपराधी ने हमें मारने के लिए इस बार क्या योजना बनाई है?
क्या मरने के बाद देखोगे उसकी योजना। मेरी बात मानो तो वहां जाने का विचार त्याग दो।

हरगिज नहीं। अब या तो अपराधी रहेगा या मैं।
तो फिर मुझे यहीं उतार दो, फिलहाल मैं अभी मरना नहीं चाहता।

क्याsss? यह तुम क्या बक रहे हो?
मैं ठीक ही बक रहा हूं श्रीमान जी।

इसके साथ ही ट्रांसमीटर से आवाज आनी बन्द हो गयी।

पलक झपकते ही उस हैलीकॉप्टर के तले से लोहे की एक गोल भारी प्लेट-सी निकली...

...और दूसरे ही पल टैक्सी की छत से आकर चिपक गयी। दरअसल वह लोहे की गोल प्लेट शक्तिशाली चुम्बक थी।
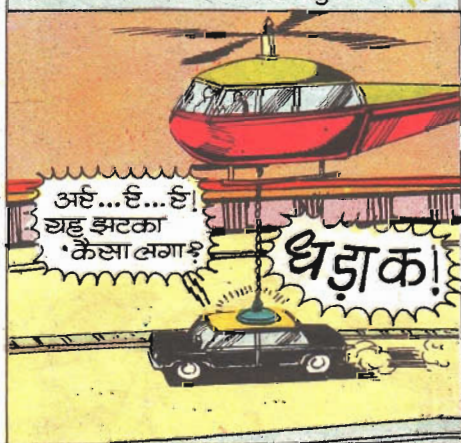
ड्राइवर ने ब्रेक लगाकर टैक्सी रोकी। लेकिन जैसे ही उसने द्वार खोलकर नीचे उतरना चाहा—
हैं! टैक्सी तो हवा में ऊपर उठ रही है।
घर्र...र्र...र्र...!
राम भइया, यह सब क्या हो रहा है? टैक्सी ऊपर उठ रही है।
ठहरो, मैं देखता हूं।
हे ईश्वर! यह तो हैलीकॉप्टर है, जो हमारी टैक्सी को उठाकर ले जा रहा है।
या खुदा! अब क्या होगा? मैं तो पहले ही कहता था कि यह दुश्मनों की ही कोई चाल है। उन्होंने हमें घर से बाहर निकालने के लिए यह योजना बनाई है।
चुप हो जाओ रहीम! मुझे कुछ सोचने दो। यह तो तय है कि हम एक बार फिर खतरे में फंस चुके हैं।
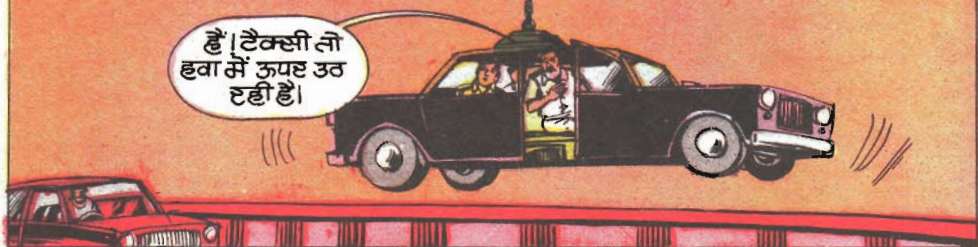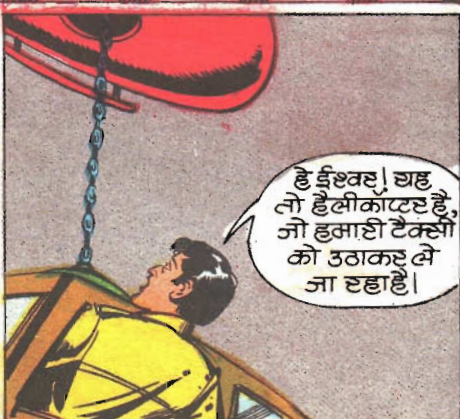
तभी ड्राइवर भय से चीख उठा –
अरे, हैलीकॉप्टर तो टैक्सी को समुद्र की ओर ले जा रहा है।
शायद वह टैक्सी को हमारे समेत समुद्र में गर्क कर देना चाहता है।
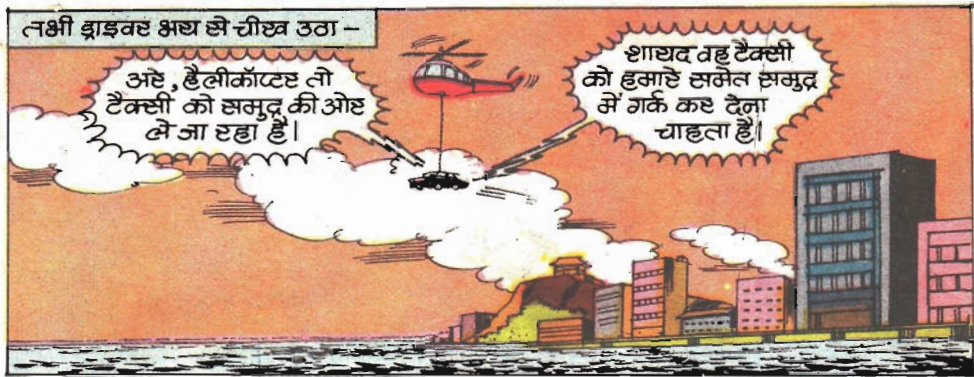
उफ! बड़ी भयंकर चाल हैं दुश्मनों की। इस बार उसने हमें मारने की वह तरकीब निकाली है, जिसमें हमारे बचने की एक प्रतिशत भी उम्मीद नहीं है।
मुझे तो अफसोस बेचारे टैक्सी ड्राइवर की मौत का होगा। हमारे साथ-साथ इस बेचारे की भी जान पर बन आई।
नहीं- नहीं, बॉस मुझे इस तरह नहीं मार सकता।

और फिर ड्राइवर पर जैसे पागलपन का दौरा पड़ गया।
बॉस! मैं तुझे जिंदा नहीं छोड़ूंगा। कुत्ते, मैंने तेरे लिए कई वर्षों तक काम किया। तेरे एक इशारे पर मैंने तेरे अनेक दुश्मनों के सिर धड़ से जुदा कर दिये...

...और तू...तू मुझे उस सेवा का, अब तक की वफादारी का यह इनाम दे रहा है। तू इन छोकरों के साथ-साथ मेरी भी जान ले रहा है...
...कुत्ते, एक बार भगवान मेरी जान बख्श दे, फिर मैं तुझे बताऊंगा कि शंकर किस बला का नाम है! सुअर, हरामजादे, धोखेबाज मि. एक्स, भगवान तेरा भी एक दिन बेड़ा गर्क करेगा।
ओहो! रहीम, यह ड्राइवर भी हमारे दुश्मनों का साथी लगता है।
हां! और शायद इसका बॉस मि. एक्स नाम का कोई आदमी है...
...राम भइया, यह इस समय मौत से बहुत भयभीत है। यदि हमने इस वक्त इससे सहानुभुति दिखाई तो यह अपने बॉस के बारे में हमें सबकुछ बता देगा।
ठीक कहते हो। मरना- जीना तो ऊपर वाले के हाथ है। यदि उसने हम पर कृपा करके हमारी जान एक बार बख्श दी तो इससे मिलने वाली जानकारी हमारे बहुत काम आयेगी। ठहरो, मैं इससे पूछताछ करता हूं।

ड्राइवर, क्या तुम उस व्यक्ति को जानते हो, जो यह सब कर रहा है। यानी कि हमारे साथ-साथ तुम्हारी भी जान लेने की कोशिश कर रहा है।
हां साहब, मैं उस कुत्ते को अच्छी तरह जानता हूं। लेकिन मुझे उसका असली नाम नहीं मालूम। वैसे गैंग के सभी लोग उसे मि. एक्स के नाम से पुकारते हैं।
क्या तुम बता सकते हो कि उसका अड्डा कहां है, और वह हमें क्यों मारना चाहता है।
उसका अड्डा लिंक रोड पर स्थित गुलाबी रंग की एक गगनचुम्बी इमारत में है...
... और वह तुम दोनों को अपने लिये नहीं, बल्कि हमारे पड़ोसी-देश की सरकार के एजेण्ट मेजर वागली के इशारे पर मारना चाहता है।
ओह, तो यह बात है।

राम फटाफट उससे कई प्रश्न पूछता रहा। इस बीच हैलीकॉप्टर उनकी टैक्सी को काफी ऊंचाई पर ले जा चुका था।
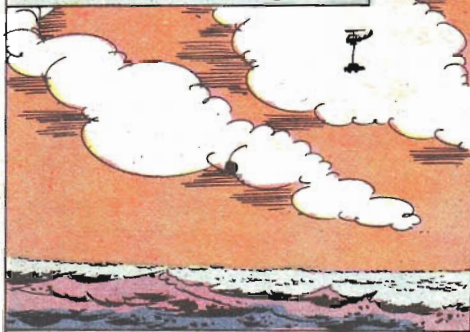
अच्छा, अब यह बताओ कि मैंने तुमसे जो कुछ पूछा, उसके अलावा भी तुम और कुछ जानते हो।
हां! बस सिर्फ इतना और जानता हूं कि अपने बॉस के इशारे पर मैंने स्वयं इस टैक्सी के अग्र भाग में एक शक्ति-शाली टाइमबम फिट किया है...

...जो अब से कुछ ही मिनटों बाद फटने वाला है।
क्या SSS ?

हां साहब, अब तो हम तीनों की मौत निश्चित है। अब हमें भगवान भी नहीं बचा सकता। हू...हू... हू... हू...।
धैर्य रखो ड्राइवर। दरवाजा खोलकर नीचे समुद्र में कूद जाओ। हो सकता है, इस तरह हम बच जायें।

अब कुछ भी नहीं हो सकता साहब! दरवाजे पर आटोमैटिक लॉक लग चुका है। अब हम इसे किसी भी तरीके से नहीं खोल सकते। फिर हमारे पास उतना समय भी नहीं है कि लॉक तोड़ सकें। बू... हू... हू... हू...!
ओह!

तभी चुम्बक ने टैक्सी को आजाद कर दिया।
हाय! अब मरे!
या अल्लाह! मेरे गुनाहों को माफ करना।
हे प्रभु! तुम सर्वशक्तिमान हो। यह ब्रह्माण्ड तुम्हारे ही इशारों का मोहताज है। इसलिए हमारी जिंदगी और मौत भी तुम्हारे हाथ में है।

छपाक!
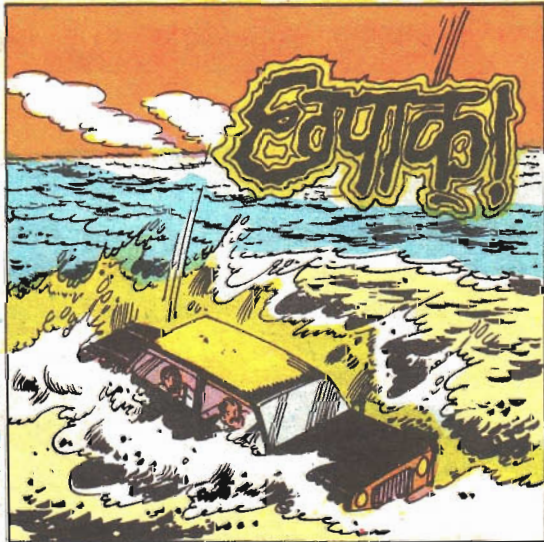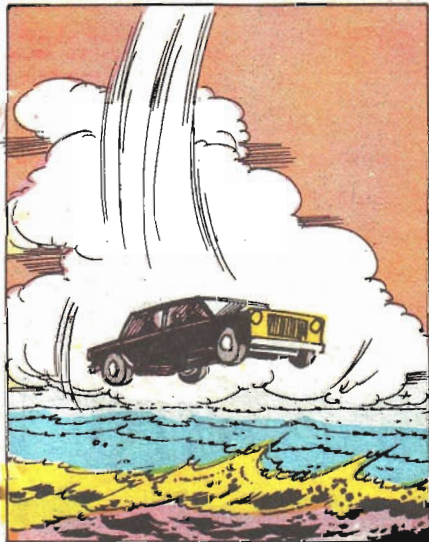
टैक्सी काफी ऊंचाई से गिरने के कारण पानी में काफी गहराई तक उतरती चली गई और टैक्सी के भीतर पानी घुसते ही राम-रहीम और ड्राइवर का दम घुटने लगा।
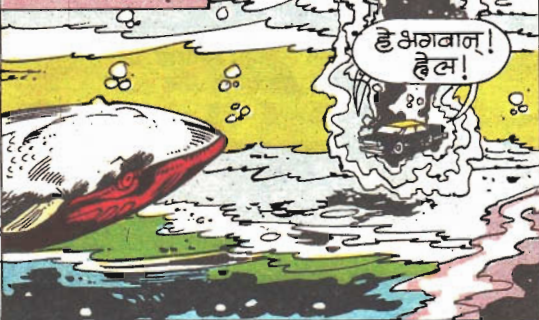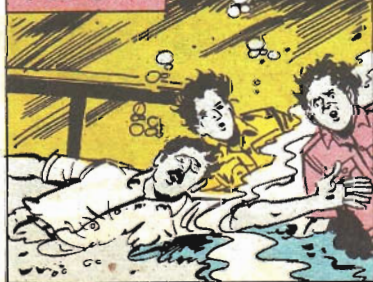
◎ क्या राम-रहीम उस भयानक व्हेल मछली से बच पाने में सफल हो सके?

◎ क्या राम-रहीम समुद्र रूपी मौत से निकलकर मि. एक्स तक पहुंच पाने में सफल हो सके?

◎ समुद्र से राम-रहीम कैसे बच पाये?

◎ मि. एक्स कौन था? और भारत में क्या कर रहा था?

◎ क्या राम-रहीम अपने उद्देश्य में सफल हो पाये?

इन सभी प्रश्नों के उत्तर जानने के लिए मनोज चित्रकथा के आगामी अंक में पढ़ें:-